International Journal of Home Science 2020; 6(3): 73-75

International Journal of Home Science

ISSN: 2395-7476
IJHS 2020; 6(3): 73-75
© 2020 IJHS
www.homesciencejournal.com
Received: 08-07-2020
Accepted: 10-08-2020

डॉ. राखी कुमारी
प्रयोगशाला प्रभारी, गृह विज्ञान,
आर०एन०पी० कॉलेज, पंडौल,
बिहार, भारत

Corresponding Author:
डॉ. राखी कुमारी
प्रयोगशाला प्रभारी, गृह विज्ञान,
आर०एन०पी० कॉलेज, पंडौल,
बिहार, भारत

बिहार के विश्वविद्यालयों में गृह विज्ञान विषय(सामाजिक विज्ञान संकाय) का अध्ययन: रोज़गारपरक या अवसरविहीन

डॉ. राखी कुमारी

परिचय

बिहार के विश्वविद्यालयों से सामाजिक विज्ञान संकाय के अतर्गत गृह विज्ञान (स्नातक) कला तथा गृह विज्ञान स्नातकोतर कला की डिग्री प्राप्त करना वर्तमान परिप्रेक्ष्य में रोज़गारउन्मुख नहीं प्रतीत हो पा रहा है| गृह-विज्ञान का अध्ययन कक्षा-X एवं कक्षा-XII में करना एक औपचारिकता मात्र है| बिहार विद्यालय परीक्षा समिति तथा केंद्रीय शिक्षा बोर्ड भी इस विषय को प्रासंगिक सिद्ध नहीं कर पायी है| इस विषय का अध्ययन विज्ञान-संकाय के साथ करना प्रासंगिक और रोजगारपरक है| गृहविज्ञान कला स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर के छात्र-छात्रायें दिशाहीन रूप से शिक्षा और अनुसंधान के क्षेत्र में अग्रसर हो बेरोजगारी सृजन के साधक बन गए हैं|

कूट-शब्द: सामाजिक विज्ञान संकाय, विज्ञान-संकाय, गृह विज्ञान, परीक्षा-समिति, शिक्षा-बोर्ड

शोध प्राकल्पना

बिहार के संपूर्ण विश्वविद्यालयों में गृहविज्ञान(कला) विषय रोज़गार उन्मुख प्रतीत नहीं होता है| मैंने उक्त परिप्रेक्ष्य में दिनांक 07-05-2018 के CBCS आधारित Curriculam-Revision मंत्रणा जिसमें बिहार के छः विश्वविद्यालयों के गृहविज्ञान विभागाध्यक्ष ने लिखित रूप से उच्च शिक्षा निदेशालय, बिहार को Revised-Curriculam दिया, को संदर्भित कर इस लेख को अनुसंधानित करना चाहा है|

प्रस्तावना:

उपर्युक्त संदर्भ इससे सही प्रतीत होता है कि दिनांक 07-05-2018 को पटना में गृहविज्ञान स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम हेतु 'च्वाइस-बेस्ड-क्रेडिट-सिस्टम' (CBCS) आधारित पाठ्यक्रम-संसोधन हेतु हुए मंत्रणा [1] जिसमें बिहार के छः विश्वविद्यालयों के गृहविज्ञान के विभागाध्यक्षों ने उच्च शिक्षा निदेशालय, बिहार को गृहविज्ञान स्नातकोत्तर बिभाग का संसोधित-पाठ्यक्रम लिखित रूप से समर्पित किया जिसमें इस विषय को रोज़गार उन्मुख बनाने का सार्थक प्रयास किया परन्तु वास्तविकता में यह रोज़गार परक बन नहीं पाया|

यद्यपि यह विषय त्रि-स्तरीय रूप से रोज़गार मुहैया करता है परन्तु गृहविज्ञान विज्ञान-संकाय के छात्र-छात्राओं को न की गृहविज्ञान-सामाजिक-संकाय वालों को|

मैंने अनुसन्धान के दौरान प्रश्नावली [2] के आधार पर जब सर्वेक्षण किया तो पाया की अंतर-स्नातक स्तर पर गृहविज्ञान विषय के छात्र-छात्राएं प्रारंभिक विद्यालयों में शिक्षक के रूप में, स्नातक-स्तर पर गृहविज्ञान से उच्च विद्यालयों में शिक्षक तथा स्नातकोत्तर स्तर पर विश्वविद्यालयों में सहायक-प्राध्यापक स्तर पर रोज़गार पाते हैं जिसमें विज्ञान एवं कला दोनों के अभ्यर्थी आवेदक होते हैं और रोज़गार में विज्ञान संकाय वाले अभ्यर्थी की रोज़गार प्रबलता प्रतिशत अपेक्षाकृत गृहविज्ञान-सामाजिक-संकाय वालों से ज्यादा होती है|

गृहविज्ञान से रोज़गार के अवसर [3]

- उत्पादन उद्योग
- पर्यटन एवं सर्विस उद्योग
- हेल्थकेयर उद्योग
- डाइटीसीयन्स एवं न्यूट्रीशन
- शिक्षा एवं अनुसन्धान
- स्वरोजगार
- टेक्सटाइल्स एवं क्लोथिंग
- रिसोर्स प्रबंधन

गृहविज्ञान में कैरियर के अवसर: [4]

	स्ट्रीम	ग्रेजुएशन	ग्रेजुएशन के बाद	पोस्ट-ग्रेजुएशनके बाद
1.	वर्ग-XII (विज्ञान/अन्य धारा) गृहविज्ञान विकल्प के साथ	त्रि-वर्षीय बी.एस.सी. गृहविज्ञान	एम.एस.सी.गृहविज्ञान (फ़ूड एंड न्यूट्रीशन, फैमिली-रिसोर्स-प्रबंधन, एपरल एंड टेक्सटाइल विज्ञान, संचार-प्रसार-प्रबंधन तथा मानव-विकास विशेषग्यता के साथ)	एम् फिल दो- वर्षीय/ पी.एच.डी. त्रि-वर्षीय गृहविज्ञान में
2.	वर्ग-XII (विज्ञान/अन्य धारा) गृहविज्ञान विकल्प के साथ	त्रि-वर्षीय बी.एस.सी. गृहविज्ञान	पी.जी. डिप्लोमा-1 से 2 वर्षीय गृहविज्ञान से	नेट-जे.आर.एफ./ एस.आर.एफ.

यद्यपि हेल्थकेयर, डाइटीसीयन्स एवं न्यूट्रीशन, फैमिली-रिसोर्स-प्रबंधन, एपरल एंड टेक्सटाइल विज्ञान, संचार-प्रसार-प्रबंधन तथा मानव-विकास विशेषग्यता के साथ एम्.एस.सी. गृहविज्ञान स्नात्तकोत्तर के छात्र-छात्राओं को रोज़गार के अवसर तो सृजित करते हैं परन्तु यह एम्.ए. गृहविज्ञान स्नात्तकोत्तर (सामाजिक विज्ञान संकाय) के छात्र-छात्राओं को रोज़गार के अवसर प्रदान करने में अक्षम होते हैं|

अद्यतन बिहार राज्य विश्वविद्यालय सेवा आयोग, पटना के सहायक-प्राध्यापक पद पर निउक्ति के विज्ञप्ति [5] दिनांक 21-09-2020 में गृहविज्ञान-सहायक-प्राध्यापक हेतु 83 पद की रिक्ति हेतु एम्.एस.सी. गृहविज्ञान स्नातकोत्तर तथा एम्.ए. गृहविज्ञान स्नात्तकोत्तर (सामाजिक विज्ञान संकाय) दोनों की मिश्रित रिक्तयां मांगी गई हैं| अतःऔर अंततः मेरी शोध अद्यतन चरितार्थ होती है जो मेरे द्वारा किये गए प्रश्नावली-सर्वेक्षण में निहित है|

बि.रा.वि. सेवा आयोग में निम्न विशेषग्यता के साथ गृहविज्ञान सहायक-प्राध्यापक पात्रता जरुरी:

- फ़ूड एंड न्यूट्रीशन
- फैमिली रिसोर्स मैनेजमेंट
- ह्यूमन डेवलपमेंट
- टेक्सटाइल एंड क्लोथिंग
- एक्सटेंशन एजुकेशन
- क्लिनिकल न्यूट्रीशन

उपर्युक्त विशेषग्यता से आशय है की एक ओर 'च्वाइस -बेस्ड-क्रेडिट-सिस्टम' (CBCS) में शिक्षाविदों द्वारा जो पाठ्यक्रम-संसोधन किया गया उसके इतर बि.रा.वि. सेवा आयोग में रिकित्यां मांगी गई है जो अपने आप में एक यक्ष प्रश्न है|

उत्पादन, पर्यटन एवं सर्विस उद्योग में गृहविज्ञान से रोज़गार के अवसर नगण्य हैं अगर हैं भी तो विज्ञान संकाय वालों का है और उसमें भी कृषि तथा पर्यटन और होटल प्रबंधन वाले छात्र प्रतियोगी हो जाते हैं| टेक्सटाइल्स एवं क्लोथिंग में अभियंत्रण से छात्र आकर इस विषय की महत्ता को कमतर कर देते हैं| यद्यपि क्लोथिंग के क्षेत्र में गृहविज्ञान कला संकाय के छात्रों को रोज़गार की संभावना हैं परन्तु इस क्षेत्र में रोज़गार संगठित नहीं हैं|

स्वरोजगार एवं रिसोर्स-मैनेजमेंट के क्षेत्र में इस विषय के छात्रों को रोज़गार की संभावना है| जहाँ तक शिक्षा क्षेत्र की बात है तो उच्च विद्यालयों में पूर्व में यह विषय डोमेस्टिक-साइंस के रूप में पढ़ी जाती थी तथा बाद में यह अन्तर-स्नातक में गृहविज्ञान विषय के नाम से प्रचलित हो गया है|

बिहार में इस विषय के साथ एक विडंबना है जिस कारण इस विषय को लगभग लड़कियां ही पढ़ती हैं| इस मनोवैज्ञनिक

सोंच का व्यापक असर महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में देखा जा सकता है| गृहविज्ञान विषय आजकल स्त्रीलिंग पर्याय बन चूका है| इस विषय को छात्राओं द्वारा दिशाहीन रूप में अध्ययन किये जाने से बेरोजगार छात्राओं की श्रृंखला बन रही है| बिहार के महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों के 20 वर्ष पूर्व से आजतक गृह विज्ञान विषय से उत्तीर्ण छात्र-छात्राओं के आंकड़ो का विश्लेषण किया जाय तो संभवतः 1% से भी न्यूनतम छात्र-छात्राओं को रोज़गार प्राप्त हुए हैं|

बिहार के राजेंद्र कृषि विश्वविद्यालय, पूसा, समस्तीपुर में गृहविज्ञान-विज्ञान-संकाय की पढाई होती है, यहाँ गृहविज्ञान-कला-संकाय में पढाई नहीं होता है| अतः यहाँ के छात्र-छात्राओं को रोज़गार की संभावनायें अधिकतर होती हैं|

राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद् (एन.सी.टी.इ.) के अंतर्गत गृहविज्ञान स्नातकोत्तर के साथ अगर कोई छात्र या छात्रा एम.एड. कर पी.एच.डी. उतीर्ण करता है और बी.एड.कॉलेज में निउक्ति चाहता है वैसी स्थिति में अब वैसे छात्र-छात्राओं की निउक्ति नहीं होती है जबकि बी.एड.में गृहविज्ञान-शिक्षाशास्त्र उनके पाठ्यक्रम में निहीत है और जीव-विज्ञान-संकाय के प्राध्यापक पढ़ाते हैं| इससे तात्पर्य है की शिक्षा के बदलते परिदृश्य में यह विषय स्वतः काल के गर्भ में समा रही है और रोज़गार सृजनात्मकता से परे दिखाई जान पड़ती है|

निष्कर्ष:

अतः बिहार के विश्वविद्यालयों से गृहविज्ञान (सामाजिक-विज्ञान-संकाय), जिसे कला संकाय के नाम से भी जाना जाता है, से अध्ययन कर इसे रोज़गार उन्मुख बनाने की दिशा में न तो शिक्षाविद और न ही राज्य सरकार का कोई सकारात्मक प्रयास अद्यतन हुआ है| केवल पाठ्यक्रम में बदलाव कर इसे रोज़गार उन्मुख बनाना ही एक पहल नहीं होता है बल्कि उसे कैसे रोज़गार उन्मुख बनाया जाये इस दिशा में भी पहल करना हम शिक्षाविद का संकल्प होना चाहिए अन्यथा यह विषय अपनी गरिमा को स्वयं ही कहीं समाप्त न करले|

सन्दर्भ:

1. दिनांक 07-05-2018 के CBCS आधारित Curriculam-Revision मंत्रणा जिसमें बिहार के छः विश्वविद्यालयों के गृहविज्ञान विभागाध्यक्ष ने लिखित रूप से उच्च शिक्षा निदेशालय, बिहार को Revised-Curriculam.
2. शोध-प्रज्ञा प्रश्नावली पृष्ठ-01 से 125
3. Mindler Educational Trust, Delhi से संदर्भित
4. Mindler Educational Trust, Delhi से संदर्भित
5. बिहार राज्य विश्वविद्यालय सेवा आयोग, पटना के सहायक-प्राध्यापक पद पर निउक्ति की विज्ञप्ति[5] दिनांक 21-09-2020